वार्षिक रिपोर्ट

ANNUAL REPORT

2018-2019

पानी की आवाज 2030 सुनो

नौला फाउन्डेशन

सजगता से सभ्यता

Published by:

Naula Foundation

1. Village: Basulisera, Post : Bagwali Pokher,
   Block & Tehsil : Dwarahat, District : Almora, Uttrakhand-263621

2. C-72, Palam Vyapar Kendra, Palam Vihar, Gurugram (Delhi NCR) , Haryana-122017

Copyright © 2019

Naula Foundation

All rights reserved. Published 2019

Production Team

Dr. Naveen Chandra Joshi

Swami Veettamso

Bishan Singh

NAULA FOUNDATION

Revived Civilisation

नौला
एक परिचय

एक समय था जब हिमालय के गांव हों या शहर, पूरा समाज खुद अपने पीने के पानी की व्यवस्था करता था। वह राज्य या सरकार पर निर्भर नहीं रहता था। सदियों पुरानी पेयजल की यह व्यवस्था हिमालयी गांवों में नौला व धारे के नाम से जानी जाती है। इस व्यवस्था को अंग्रेजों ने भी छेड़ने की कोशिश नही की। यह व्यवस्था केवल तकनीक पर आधारित नही थी बल्कि पूरी तरह से यहां की संस्कृति की पहचान थी ।

नौला पहाड़ों के छिपे स्रोतो से जल को एकत्रित करने वाला एक छोटा सा कुण्ड है। इसकी सुंदर मंदिर जैसी संरचना देखने लायक होती है। मिट्टी और पत्थर से बने नौले का आधा भाग जमीन के भीतर व आधा भाग ऊपर होता है।

नौलों का निर्माण केवल पत्थर व मिट्टी से किया जाता है। कुण्ड के दो या तीनों ओर ऊंची दीवार बनाकर पत्थर की स्लेटों से ढलवी छत बनाई जाती है। नौले के अंदर की दीवार पर प्राय: विष्णु भगवान की प्रतिमा बनाई जाती है। नौले प्राय: ऐसे जलस्रोत पर निर्भर होते है जो निचली घाटियों के समतल ढलानों में स्थित हों और पानी ऊंचाई से न गिरकर ज़मीन के भीतर से रिसकर बाहर आता हो। मूलत: यह बावड़ीनुमा संरचना है जिसे मंदिर की तरह दो या तीन ओर से बंद कर ऊपर छत डाल दी जाती है। नौलों के तल का आकार यज्ञवेदी का ठीक उल्टा होता है। पानी वर्गाकार सीढ़ीनुमा बावड़ी में एकत्रित होता है। इन सीढ़ियों को पत्थरों से जोड़कर इस प्रकार बनाया जाता है कि पत्थरों के बीच की दरारों से रिसकर स्रोत का पानी बावड़ी में इकट्ठा होता रहे।

आज परम्परागत नौलों की जगह टोटियों ने ले ली इन आधुनिक जल नीतियों ने पारम्परिक जलपद्धतियों को लगभग समाप्त कर दिया। इस नल व्यवस्था ने घरों के भीतर या घरों के नजदीक पानी तो ला दिया पर हमने इन पुश्तैनी नौलों को भुला दिया।

नौले अत्यंत संवेदनशील होते हैं। इनके ढांचों में छेड़-छाड़ करने से ये सूखने लगते है। अनेक स्थानों में परंपरागत नौलों को बंद कर उन्हें आधुनिक पेयजल ढांचे में परिवर्तित कर दिया गया परिणाम स्वरूप नौलों का जल स्तर घटता चला गया कुछ तो सूखने की कगार पर आ गये ।

उत्तराखंड में उच्च हिमालयी बस्तियों में हिमशिखरों से पानी बहकर आता है। अत: इन क्षेत्रों में जल-संग्रहण की विकसित परंपराएं नही हैं। निचली घाटियों के ग्रामीण पानी की जरुरतें नदियों से पूरी करते हैं अत: मध्यवर्ती पहाड़ियों में जहां पानी की अपेक्षाकृत कमी है, जल संग्रहण की समृद्ध परंपराएं यहां होती थी यही नौले ज्यादा संख्या में पाए जाते हैं।

नौले अब लगभग ध्वस्त हो चुके है या हो रहे है । उसकी दीवारें और छत टूट रही है । उसके किनारे कांटेदार पौधे व घास उग आयी है । इस दुर्दशा के बाद भी कुछ नौलों में स्वच्छ पानी दिख रहा है । मात्रा जरूर थोड़ी कम हो गई है। जल-भरण क्षेत्र में कोई अच्छी वनस्पति, झाड़ियां आदि नहीं है । रह गये है केवल चीड़ के पेड़ और लैंटाना के अनियंत्रित जंगल। नौला फाउन्डेशन की स्थापना इसी उद्देश्य से की गयी है कि किस प्रकार इन नौलों, धारों, मगरों की पुनर्स्थापना हो, और हम अपने परंपरागत जल प्रबंधन की और लौट चले।

पद्मश्री प्रो.डा.यशोधर मठपाल
भीमताल

पद्मश्री प्रो.डा.यशोधर मठपाल

भीमताल

नौले धारे हमारे उत्तराखंड की ऐतिहासिक धरोहर के रूप में जल मंदिर ही नहीं बल्कि हमारी पूरी संस्कृति, सभ्यता को अपने इर्द गिर्द समेटे हुए हैं, इनको हमें बचाना ही होगा तभी हमारी संस्कृति, सभ्यता बचेगी ये कहना हैं पद्मश्री प्रो. डा. यशोधर मठपाल जी का, जो स्वयं अपने आप में एक धरोहर एक पुरातत्वविद्, पर्यावरणविद और विश्व स्तरीय चित्रकार हैं ।1973 और 1978 के बीच, आपने विश्व विरासत स्थल भीमबेटका की 133 गुफाओं से मैन्युअल रूप से सभी चित्रित रूपांकनों (6214) को रिकार्ड किया। 1981 में, आपने भोपाल में म्यूज़ियम ऑफ़ मैन (IGRMS) के लिए काम करने के दौरान, उन्होंने श्यामला पहाड़ियों पर 28 रॉक-शेल्टर से चित्रित रूपांकनों को रिकार्ड किया। भीमबेटका के भोंरावली पहाड़ी पर अपने शोध के अलावा, उन्होंने 1983 में भीमताल में अपने स्वयं के संग्रहालय "लोक संस्कृति संग्राहलय" (लोक सांस्कृतिक संग्रहालय) की स्थापना की। 2000-2001 में, डा. मठपाल को Maison Des Sciences De L'HHomme, पेरिस में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में आमंत्रित किया गया था, जहाँ इंडियन रॉक आर्ट प्रजनन की छह महीने लंबी प्रदर्शनी की व्यवस्था की गई थी। डा. मठपाल 1978 से 2019 तक सैकड़ों राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कला सम्मेलनों में भाग ले चुके हैं। डा. मठपाल के पास अब तक 45 पुस्तकों और 200 से अधिक शोध लेख हैं जिन्हें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने सराहा है । भारत सरकार ने कला के क्षेत्र में उनके अप्रतिम योगदान को पहचाना और उन्हें 2006 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। हम सभी नौला फाउन्डेशन के सहयोगीगण ईश्वर से आपके सुखद स्वास्थ्य की प्रार्थना करते है, और आपके अमूल्य दिशा निर्देश पर नौले-धारे के संरक्षण हेतु कार्य करने के लिए सदा संकल्पित है ।

पर्यावरण संरक्षक मनोहर सिंह मनराल

पवलगढ़

NAULA FOUNDATION

पर्यावरण संरक्षक मनोहर सिंह मनराल

पवलगढ़

आज जलवायु परिवर्तन ने पूरे विश्व का मौसम चक्र बिगाड़ दिया है और जलवायु परिवर्तन की वजह तो हम सब ही जानते हैं कि विकास की दौड़ मे भारी उद्योगीकरण, जनसंख्या विस्फोट और पेड़ों की अन्धाधुन्ध कटाई है और मौसम चक्र के बिगड़ने से कई प्रभाव पड़े है जिसमें कि पृथ्वी के भूजल का स्तर गिरना भी एक है, जिसकी वजह आज पूरे विश्व मे पेय जल की समस्या पैदा हो गयी है । मौसम चक्र के बिगड़ने से पेयजल के प्राकृतिक जल स्रोत स्वत: रिचार्ज नहीं हो पाते, ये कहना हैं 74 वर्षीय जमीनी रूप से कार्यरत पर्यावरणविद श्री मनोहर सिंह मनराल का जो चुपचाप करीब 45 साल से जल-जंगल-जमीन के संरक्षण के लिए शिवालिक की तलहटी में पवलगढ़ कंज़र्वेशन रिज़र्व फारेस्ट में कार्य कर रहे हैं । श्री मनराल का पूरा जीवन पलायन से खाली हो रहे गावों की रंगत लौटाने में बदला हैं । लम्बे इंतजार के बाद उनकी मेहनत रंग लायी हैं जिसकी बदौलत अब कुछ पलायन कर चुके अधिकतर युवा वापस अपने गांव लौटे हैं और स्वरोजगार पर ध्यान दे रहे हैं । कोटाबाग़ के पास गांव पवलगढ़ में उनकी जो पैतृक करीब 45 बीघा बन्जर जमीन थी जिसको समतल व उपजाऊ बनाने में श्री मनराल को करीब १६ साल लग गए । श्री मनराल ने आजीवन पूरे उत्तराखंड राज्य के ग्रामीणों को उनके वन अधिकार के महत्व के बारे में समझाया और स्वयं के अथक परिश्रम व वन विभाग के संरक्षण में जन समुदाय की सक्रिय भागीदारी से आज कोटाबाग पवलगढ़ क्षेत्र में आज एक जैव विविधता से मिश्रित वन में तब्दील करने मे सफल हुए हैं, जहां से गुजरती दाबका नदी में भरपूर पानी और जंगली जानवरों के लिए सुरक्षित जगह और उनके लिए भरपूर भोजन और पानी उपलब्ध हैं । श्री मनराल ने इस वन क्षेत्र में वन विभाग के साथ मिलकर सैकड़ो चाल-खाल व जलाशय बनाये और प्रवासी पौधा कुरी को हटाकर सैकड़ो की तादात में सदाबहार वृक्ष लगाए । श्री मनराल ने पवलगढ़ प्रकृति प्रहरी के माध्यम से पवलगढ़ कंजर्वेशन रिजर्व फारेस्ट के आसपास के गांव वासियों को प्रोत्साहित करके उनको जैविक खेती, मौन पालन व स्वरोजगार करने के लिए प्रोत्साहित किया जिसकी बदौलत आज ये क्षेत्र पूरे उत्तराखंड में सबसे समृद्ध क्षेत्रों में से जाना जाता हैं । आज श्री मनराल और उनके 90 साथियों का काम 24 गांवों में फैल चुका हैं इसमें मल्टीनेशनल कंपनी की नौकरी छोड़कर आये एमबीए पास युवाओं के इस दल में करीब १२ युवा महिलायें भी शामिल हैं । साल 2000 में श्री मनराल ने उत्तराखंड राज्य आन्दोलन के अमर शहीदों की याद में एक शहीद पार्क अपने गांव पवलगढ़ में बनाया और यहीं से होम स्टे की शुरुवात की जिसमे देश विदेश के पर्यटक आकर उनकी मेहमान नवाजी के साथ प्रकृति का आनंद भी उठाते हैं ।

NAULA FOUNDATION
Revived Civilization

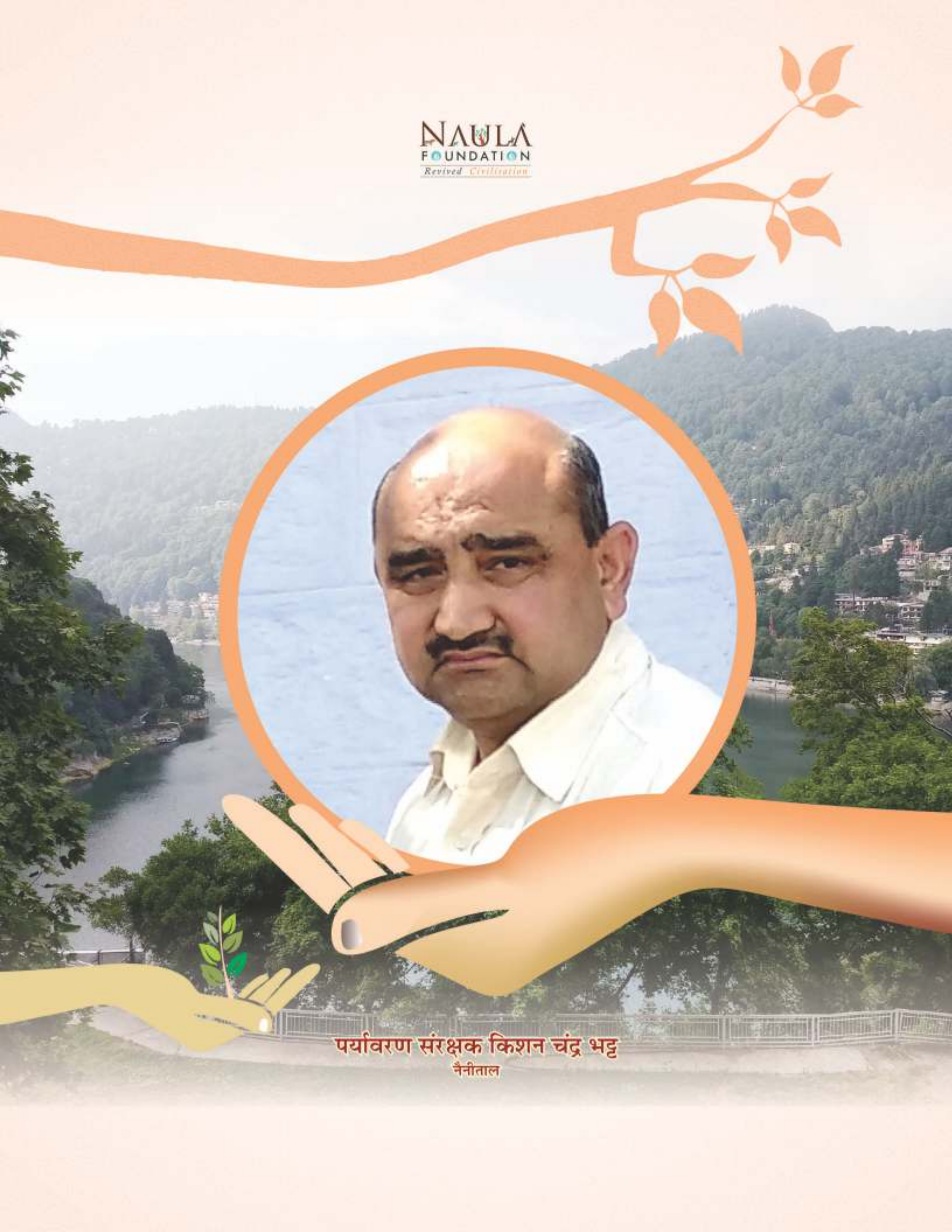

पर्यावरण संरक्षक किशन चंद्र भट्ट
नैनीताल

NAULA FOUNDATION

जल संकट तो हमारी भूलों और लापरवाहियों से ही उपजा है। दैनिक उपयोग में आवश्यकता से अधिक मात्रा में जल का अपव्यय करने की आदत ने जल संकट बढ़ाया है। जलस्रोतों के रखरखाव में अपनी व दूसरे लोगों की भागीदारी सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता है। अब तक जो भूलें हमने की हैं उनका सुधार भी हमें मिलजुल कर ही करना है। हम एक-एक मिलकर अनेक बन सकते हैं। जब अनेक हाथ श्रमदान करेंगे तो जलस्रोत अवश्य साफ रहेंगे और पुर्नजीवित होंगे। उन्हें पुनः गंदा करने से भी बचाएँगे। जब हमारे पारम्परिक जलस्रोत नौले-धारे और गधेरे सुरक्षित रह पाएंगे तभी गंगा यमुना सतत वाहिनी नदियों में पानी होगा, ये कहना हैं नैनीताल निवासी प्रसिद्ध पर्यावरणविद श्री किशन चंद्र भट्ट का जो पुरे कुमाऊँ क्षेत्र में जल जंगल व जमीन की लड़ाई लड़ रहे हैं। जब हमारे पारम्परिक जलस्रोत नौले, धारे, गधेरे सुरक्षित रह पाएंगे तभी मां गंगा और उनकी सहायक नदियों में पानी होगा और तभी उत्तराखंड राज्य हमारे देश की प्यास बुझा पायेगा, हमारे बुद्धिजीवी, वैज्ञानिक, पर्यावरणविद,भूगर्भशास्त्री हमें सालों से चेता रहे है पर हम लापरवाह बने रहे । वे लोग अपने स्तर पर जितना कर सकते है कर रहे है, पर यह काफी नही है । श्री भट्ट किसी भी कार्य को ना नहीं कहते, हमेशा कहते है कि प्रश्न आया है तो उसका उत्तर भी अवश्य होगा । आज मानव सभ्यता पर आया यह पानी का संकट बहुत बड़ा है और इससे लड़ने के लिये हम सब को अपने अपने स्तर पर कार्य करने की जरूरत है । श्री भट्ट के कुशल निर्देशन में पहाड़-पानी-परम्परा की नींव रखी गयी, जिसको लेकर क्षेत्रीय जन भागीदारी के परस्पर सहयोग से पूरे मध्य हिमालयी क्षेत्र उत्तराखंड में प्रतिबद्धता के साथ स्थानीय निवासियों के सहयोग और भागीदारी से मृतप्राय पेयजल स्रोतों के संरक्षण, संवर्धन और निरंतर विकास के लिए तेजी से धरातल पर कार्य शुरू कर दिया हैं । श्री भट्ट ने सैकड़ों लोगो को पलायन से बचाया है, कितने ही परिवार के लोग इनके सहयोग से इसी पहाड़ पर अपनी आजीविका खुशी खुशी चला रहे है ।

NAULA FOUNDATION
Revived Civilization

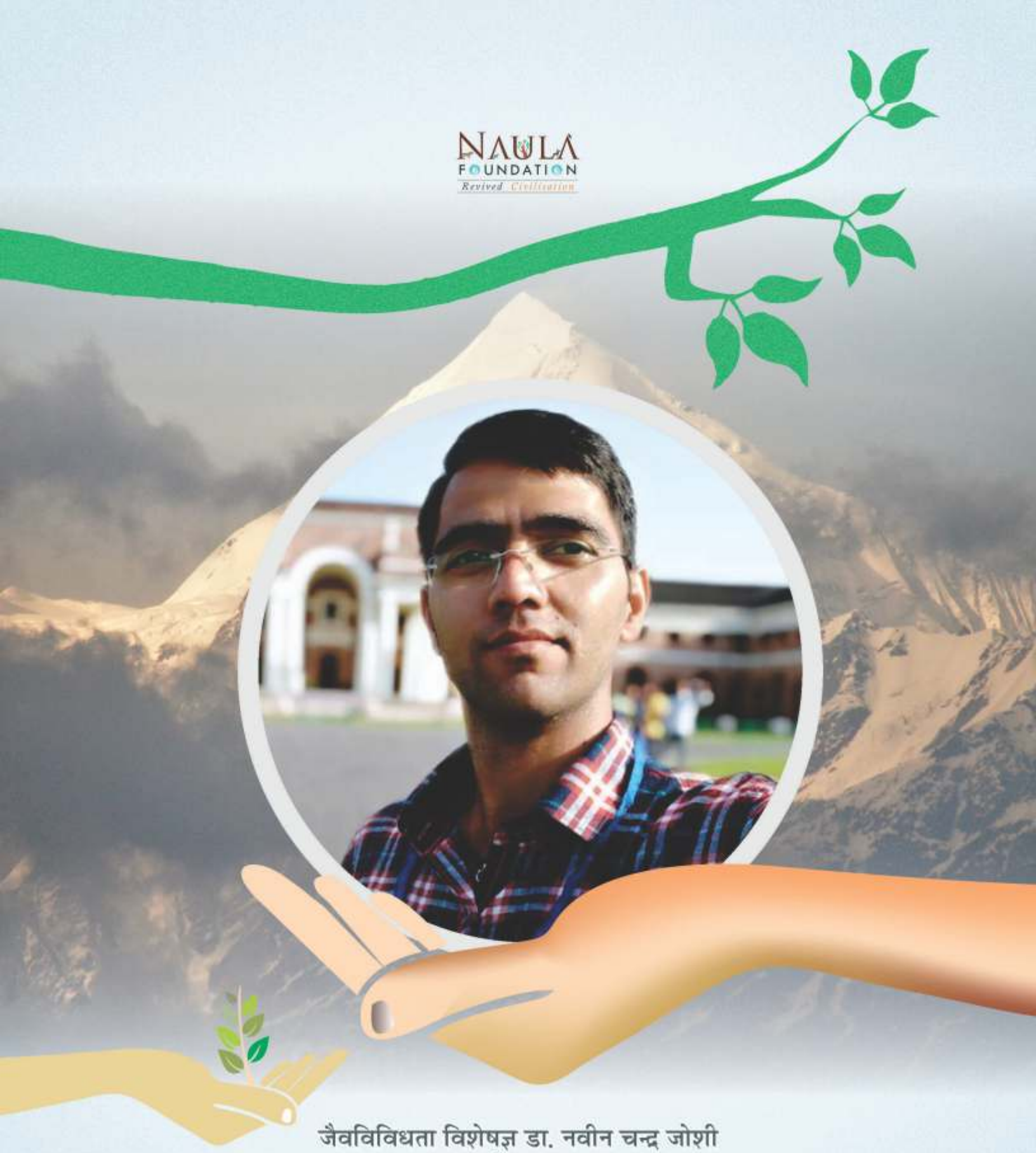

जैवविविधता विशेषज्ञ डा. नवीन चन्द्र जोशी
देहरादून

NAULA FOUNDATION

जैवविविधता विशेषज्ञ डा. नवीन चन्द्र जोशी

देहरादून

डा. नवीन चंद्र जोशी ने सन 2007 में हेमवती नंदन विश्वविद्यालय श्रीनगर गढ़वाल से स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से 2010 में जंतु विज्ञान विषय में पी.एच.डी.की डिग्री प्राप्त की। तत्पश्चात, उन्होंने 5 वर्षों तक उच्च शिक्षा विभाग में अध्यापन का कार्य किया एवं अनेक सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहे।

डा. जोशी को शिक्षाविद् होने के साथ-साथ 11 वर्षों का अनुसंधान एवं मार्गदर्शन का अनुभव भी है। उन्होंने उच्च शिक्षा एवं पर्यावरणीय शोध के क्षेत्र में अनेक योगदान दिए हैं जैसे उनके द्वारा लिखे गए 4 अध्याय उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय में पढ़ाये जाते हैं एवं उनके कई वीडियो लेक्चर उत्तराखंड विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध हैं। उनके द्वारा कई स्नातकोत्तर विद्यार्थियों का शोध मार्गदर्शन भी किया गया है। उन्होंने 30 से अधिक संगोष्ठीयों और सम्मेलनों में शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं एवं उनके 15 से अधिक शोध पत्र एवं लेख विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकशित हो चुके हैं। उन्हें भारतीय पर्यावरण अकादमी द्वारा युवा वैज्ञानिक स्वर्ण पदक से भी सम्मानित किया गया है।

वर्तमान में डा. जोशी कई अंतराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड में शामिल हैं एवं पिछले 4 वर्षों से भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून में परियोजना वैज्ञानिक के रूप में कार्यरत हैं एवं हिमालय के पारम्परिक ज्ञान पर शोध कार्य एवं उसको लिपिबद्ध करने का काम कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त वे हिमालयी पर्यावरण एवं यहाँ के लोगों की आजीविका पर जलवायु परिवर्तन के असर पर भी शोध कार्य कर रहे हैं।

NAULA FOUNDATION
Revived Civilization

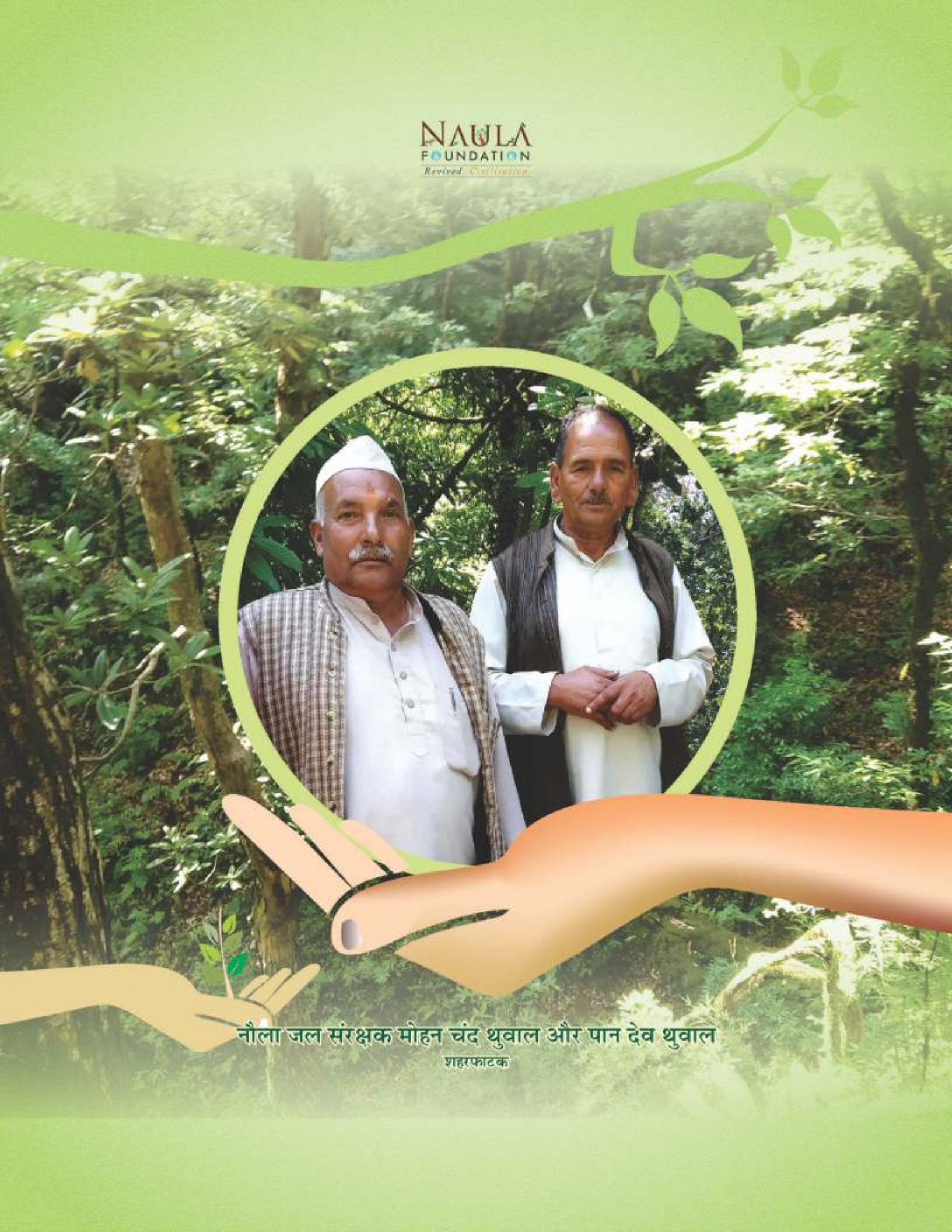

नौला जल संरक्षक मोहन चंद थुवाल और पान देव थुवाल

शहरफाटक

NAULA FOUNDATION

अगर हिमालय को बचाना हैं, अपने अस्तित्व को बचाना हैं तो हमें पानी को बचाना ही होगा ये कहना हैं नौला फाउंडेशन के मुख्य संरक्षक श्री पान देव थुवाल जी का, जो अल्मोड़ा जिले के लमगड़ा ब्लाक के शहरफाटक के लोकप्रिय ग्राम पंचायत डामर, वन पंचायत डामर के सम्मानित ग्राम प्रधान के पद पर आसीन हैं जिनसे आदर्श प्रेरणा लेकर नौला फाउंडेशन जल-जंगल-जमीन के जमीन के संरक्षण, प्राकृतिक नौले-धारों स्रोतों के संरक्षण, संवर्धन व उत्तराखंड के समस्त नौले-धारों को उनका सम्मान दिलाने के सफल प्रयास कर रहा है। हमारे मुख्य संरक्षक प्रेरणास्रोत श्री पान देव थुवाल जी ने करीब 19 सालों तक डामर वन पंचायत का सरपंच रहते हुए और अब ग्राम पंचायत का ग्राम प्रधान रहते हुए इस जैव विविधता और जल स्रोतों से भरपूर क्षेत्र मे प्राकृतिक जल संरक्षण एवं जैव विविधता संवर्धन के लिए सम्मानजनक कार्य किये है। श्री पान देव थुवाल व श्री मोहन चंद थुवाल (वर्तमान वन सरपंच) का 500 हेक्टेयर आरक्षित वन पंचायत क्षेत्र डामर, जो कि करीब 500 हेक्टेयर में फैला उत्तरी गौला वन रेंज, 15-16 किलोमीटर चौड़ा और 10 किलोमीटर लम्बा, तीन अलग अलग जिलों (उत्तरी सीमा अल्मोड़ा, पश्चिमी सीमा नैनीताल व पूर्वी दक्षिणी सीमा चम्पावत तक फैला हुआ हैं जो की तीन मुख्य गैर हिमानी स्रोत आधारित नदियों (गौला,पनार व लधिया गाड़) का उद्गम स्थल भी हैं। डामर वन पंचायत के पश्चिमी ढाल के असंख्य प्राकृतिक जल स्रोतों से हल्द्वानी की जीवनरेखा नदी गौला का उद्गम होता हैं जो एक बहुत बड़े भूभाग को सींचते हुए बाद में गंगा की मुख्य सहायक नदी रामगंगा में मिलती हैं और पूर्वी और दक्षिणी ढाल के असंख्य प्राकृतिक जल स्रोतों से पनार नदी संग्रीति गाड़, जबरैल गाड़ और लधिया नदी का उद्गम होता हैं जो टनकपुर के पास काली नदी में मिलती हैं । दोनो थुवाल बंधु वन पंचायत क्षेत्र डामर में चाल-खाल, चक डैम, जलाशय व विशेष प्रकार की खंतिया बनाकर मैदानी क्षेत्र की जीवनरेखा गौला नदी व पनार नदी के उद्गम क्षेत्र को बचाये रखने में सफल रहे हैं जिसकी बदौलत ये पूरा इलाका आज खुशहाल हैं, पूरा वन पंचायत भरपूर बांज, देवदार, बुरांश, काफल जैसे चौड़ी पत्ती के घने जंगल की जैव विविधता से भरपूर हैं क्षेत्र के सभी गांवों में घर घर पर्याप्त पानी की सुविधा हैं और हर गांव में वृहद् स्तर पर आलू व राजमा की खेती होती हैं जिसकी वजह से पलायन लगभग नगण्य हैं ।

जहां दूसरी ओर खरबो के बजट वाले वन विभाग के जंगल रूखे सूखे बने हुए है, आगजनी और कुव्यवस्था के भयंकर शिकार हैं वहीं पर वन पंचायत क्षेत्र डामर ना केवल पूरी तरह से सुरक्षित और हरा भरा हैं बल्कि गांव वालों के सहयोग से पोषित है । इस क्षेत्र को पूरे उत्तराखंड में सर्वश्रेष्ठ ग्राम व वन पंचायत का दर्जा हासिल हैं ।आज उत्तराखंड के हर ग्राम, हर ब्लाक- जिला स्तर पर लोगों को जागृत करने की जरूरत है । इस तरह प्रत्येक गांव के जल स्रोत को पुर्नजीवित होने मे एक दो साल तो जरूर लगेंगे, साथ ही जैवविविधता भी सुदृढ़ होगी, जीवन में खुशियां होंगी ,और परिणाम दीर्घकालिक होगा।

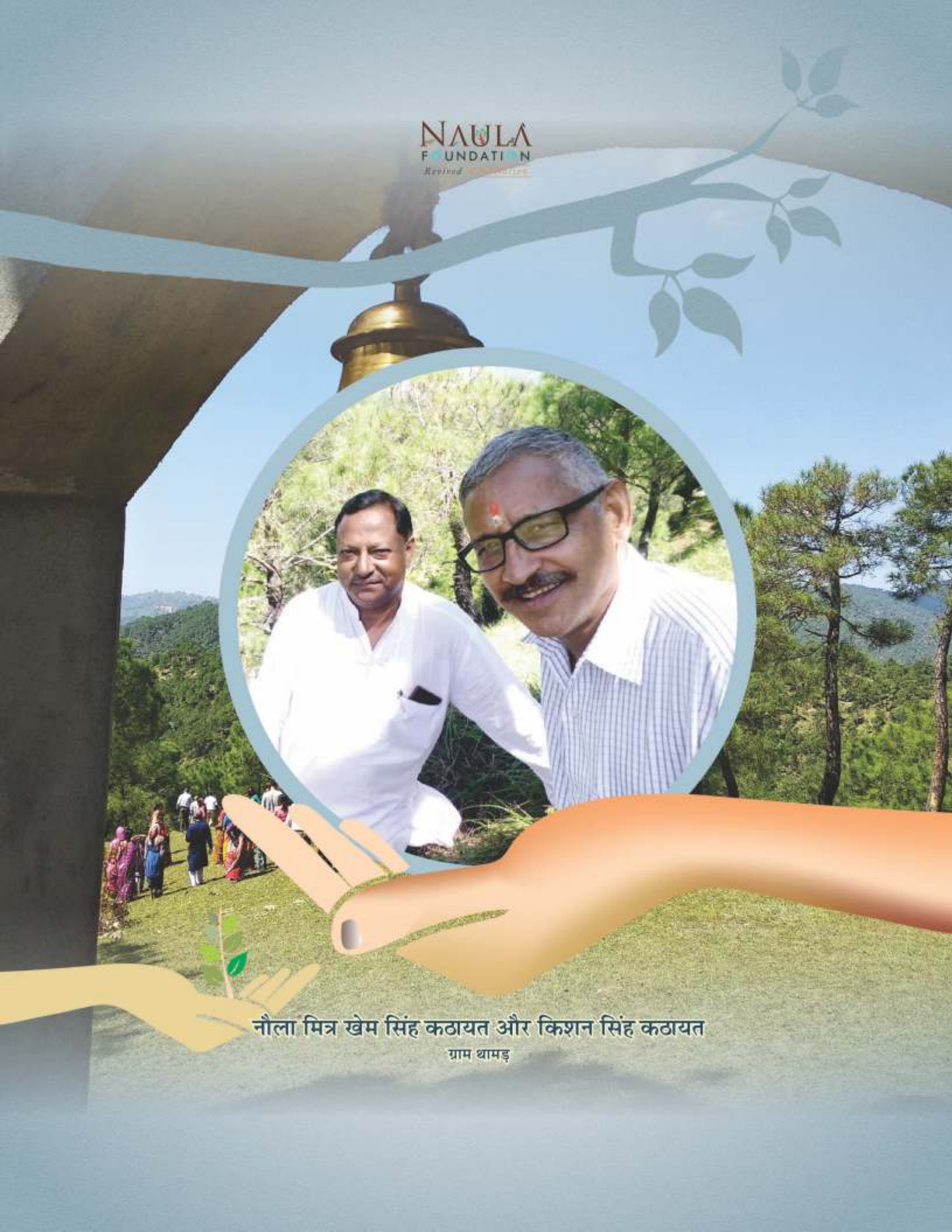

नौला मित्र खेम सिंह कठायत और किशन सिंह कठायत

ग्राम थामड़

NAULA FOUNDATION

हिमालयी राज्य देवभूमि उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में द्रोणागिरी पर्वत से निकलने वाली सदानीरा गगास नदी के उत्तरी तट पर बग्वाली पोखर में छोटा सा गांव थामड़, एक सुन्दर सी पहाड़ी पर स्थित हैं जो अब नौला फाउंडेशन की कार्यशाला भी है, खेम सिंह कठायत एवं किशन सिंह कठायत की अगुवाई में अब भारत का एक आदर्श गांव बनने की राह में अग्रसर हैं। यहां से सूर्योदय एवं सूर्यास्त का दुर्लभ प्राकृतिक दृश्य देखते ही बनता हैं। थामड़ एक मध्यम आकार का गांव है, जिसमें कुल 90 परिवार रहते हैं। जनगणना वर्ष 2011 के मुताबिक गांव में कुल 258 की आबादी है जिनमें से 106 पुरुष हैं जबकि 152 महिलाएं हैं । पानी के 10-12 प्राकृतिक स्रोत नौला हैं पर पानी केवल 1-2 नौलों में हैं। गांव को सरकार से कुछ जगह पर स्वजल योजना से पीने का पानी और सिंचाई के लिए निचले इलाके में गगास नदी के नहर के पानी से पानी मिलता है परन्तु गर्मियों के दौरान गांव वालों को पानी की भारी कमी का सामना करना पड़ता हैं और फिर पूरा गांव गगास नदी पर निर्भर हो जाता है जो गांव से 1.5 किमी दूर है। गांव में एक जल योजनाएं (स्वजल) रही हैं जिसमें ज्यादातर समय गांव में पानी की आपूत्र नहीं की जाती है। ऐसी पानी की किल्लत से परेशान होकर इस गांव के ज्यादातर लोग अपनी आजीविका के लिए शहर पलायन कर गए हैं। अतीत में यह क्षेत्र प्राकृतिक नौले, धारे, गधेरे आदि जल संसाधनों से भरा थे लेकिन अब वे सूख गए हैं, पूरे क्षेत्र में चीड़ के जंगल और कंक्रीट के घर बन गए हैं, उत्तराखंड में विशेषत: पर्वतीय जनपदों में पेयजल के स्रोत नौलों, धारों,झरनों और गधेरों आदि के रूप में हैं। थामड़ को एक आदर्श गांव बनाने में खेम सिंह और उनके अनुज किशन सिंह कठायत की अगुआई में नयी सोच नयी दिशा और जय माँ काली महिला मंगल दल की सदस्यों को एकजुट करकें विभिन्न जन जागरूकता कार्यक्रम की योजना,जल संचयन योजना, सड़क निर्माण योजना बनाई और उसे मूर्तरुप दिया। खेम सिंह द्वारा थामड़ में रोपित किए गए वृक्षों में से लगभग 90 प्रतिशत पौधे स्वस्थ हैं और उनकी ठीक गति से वृद्धि हो रही है। प्रत्येक सीजन में चाल-खाल का निर्माण कार्य दक्षता के साथ किया गया है। पानी प्राकृतिक स्रोत नौला में पानी का जलस्तर सुधरा है, कुल मिलाकर अभी तक किया गया कार्य सराहनीय है । खेम सिंह अपने ग्राम थामड़ में भूजल के लगातार दोहन, सूखते जलस्रोत तथा जल संरक्षण,भण्डारण और संवर्धन के प्रति जागरूकता की एक उम्मीद बनकर सामने आये हैं ।

NAULA FOUNDATION

Revived Culture

प्रकृतिप्रेमी मनोज पाण्डेय

ग्राम पनेरगांव

NAULA FOUNDATION

रानीखेत कौसानी रोड, बग्वाली पोखर, द्वाराहाट ब्लाक, जिला अल्मोड़ा के मनोज पांडेय, पूर्व ग्राम प्रधान पनेरगांव एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व के मालिक, एवं पर्यावरण के प्रति गंभीर संवेदनशील व्यक्ति हैं । अर्थ शास्त्र में स्नातकोत्तर मनोज पांडेय ने कई संस्थाओ में नौकरी भी भी परन्तु मन अपने जन्मभूमि के लिए कुछ करने की तमन्ना से प्रेरित रहता था इसी प्रेरणा से वर्ष 2002 में मनोज पांडेय ने ग्राम सभा पनेरगांव का ग्राम प्रधान का चुनाव लड़ा और जीत गए, ग्राम प्रधान की जिम्मेदारी को बखूबी निभाया और इसी दौरान उन्होंने एक नर्सरी की स्थापना की और एक नए मिश्रित जंगल का विकास किया, साथ ही आजीविका हेतु पनेरगांव में ही मिडवे रेस्टोरेन्ट खोला। मिडवे रेस्टोरेन्ट और उसके इर्द गिर्द का पर्यावरण इन्होने अपनी इच्छा शक्ति से सिर्फ हराभरा ही नहीं बल्कि इतना मनोहारी कर दिया है कि अब वह आसपास से लेकर दूर-दराज तक के लोगों को लुभाने लगा है। इनका काम सिर्फ एक पहाड़ी पर पौधे लगाकर जंगल खड़ा कर देने तक ही सीमित नहीं है, नौलो, गधेरो की गन्दगी हटाने और उन्हे पुर्नजीवित करने में भी इन्होने श्रमदान किया है।

हरे पौधे बड़े होकर पेड़ बनने को आतुर हैं। कई चाल खाव बनाये हैं, अब इनमें बारिश के पानी का ठहराव नजर आता है। स्थानीय लोग स्वीकारते हैं कि यह काम लोगों की कल्पना से भी परे था । कई बार उन्होंने पहाड़ी के अलग-अलग हिस्सों पर जाकर देखा। लोगों से बात की। पौधों को गर्मियों में जिन्दा रख पाने के लिये पानी की उपलब्धता पर गौर किया।

बस एक संकल्प और लोगों का मिला साथ, उन्होंने श्रमदान के लिये लोगों को इकट्ठा किया। लोग तो कम ही पहुँचे लेकिन इससे हौसला नहीं डिगा। उन्होंने चिलचिलाती धूप और भीषण गर्मी में भी पसीना बहाते हुए पौधरोपण के लिये जमीन में गड्ढे बनाने और पानी रोकने की तकनीकों पर काम करना जारी रखा। धीरे-धीरे लोग उनके काम में जुटते चले गए। आज पनेर गांव एक आदर्श गांव है, हमें मनोज पाण्डेय से आगे भी बहुत उम्मीदें हैं ।

प्रकृति प्रेमी श्री प्रदीप अधिकारी

नैनीताल

नौला फाउन्डेशन से जुड़े प्रकृति प्रेमी श्री प्रदीप अधिकारी, झीलों की नगरी नैनीताल, उत्तराखंड में कई वर्षो से छोटा सा व्यवसाय चलाते हैं और रोजमर्रा की जिंदगी में पर्यटकों को खूबसूरत झील और उसके आसपास को दूषित करते देखते रहते थे और पर्यटन नगरी नैनीताल मे रहने के कारण आने वाले देसी विदेशी पर्यटकों को हमारी दूषित पर्यावरण की फोटो को अपने कैमरे मे कैद करते लाचार सिस्टम पर शहर का उपहास उड़ते देखकर कई बार शर्म महसूस करते, यहाँ की सुन्दर झील का घटता जल स्तर, नालो में कुन्तलो के हिसाब से समायी हुई गंदगी, सीवर का गन्दा पानी झील मे प्रवाहित होना उन्हें काफी चिंतित करता था । स्थानीय सुलभ शौचालयों की कमी होने से पर्यटक पूरे शहर या पहाड़ में किसी भी जगह खाली स्थान देख कर खुले में पेशाब कर देते है। प्राय: यह समस्या हर पर्यटन स्थल के साथ जुड़ी है । प्रदीप अधिकारी ने इसी समस्या से निजात पाने के लिए उन्होंने कुछ नया करने की सोची और देसी जुगाड़ से एक नया आविष्कार Nature Safe Urinal जो मूलत: फ्रांस मे इस्तेमाल होने वाले मूत्रालय का देसी डिज़ाइन रूप हैं, बनाया। जिसको प्रयोग के तौर पर नैनीताल मे उन्होनें तीन जगहों पर स्थापित किया है जो अभी तक पूर्णतया उपयोगी एवं सफल हुआ है । प्रदीप जी का उद्देश्य अब इसे पूरे उत्तराखण्ड के हर शहर में लगाने की योजना हैं जिससे पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सकेगा । पर्यटकों की भीड़ की इस गंदगी को एक जगह एकत्रित कर उस गंदगी से बनने वाली खाद एवं उर्वरक को हम उपयोग कर स्वच्छ पर्यावरण की दिशा मे सकारात्मक पहल कर सकते हैं।

ठाकुर देवेंद्र सिंह (देवन प्रधान)

बुलंदशहर

गांव मिर्ज़ापुर नंगली, तहसील स्याना, जिला बुलंदशहर को उत्तर प्रदेश राज्य का सर्वश्रेठ आदर्श गांव बनाने के पीछे प्रकृति प्रेमी, युवा और जोशीले ग्राम प्रधान ठाकुर देवेंद्र सिंह को जाता हैं । ठाकुर देवेंद्र सिंह के सफल प्रयासों से स्वच्छ भारत मिशन में ये गांव आज एक आदर्श गांव की अग्रणी श्रेणी में हैं देवेंद्र सिंह ने ही गांव वालो को जल सरंक्षण की महत्ता, और गांव वालो को भी पानी बचाने और स्वछता अभियान से जोड़ने पर जोर दिया। गांव के लोगो ने एकजुट होकर अपने शिक्षित युवा और जोशीले ग्राम प्रधान (ठाकुर देवन प्रधान) देवेन्द्र सिंह के नेतृत्व में जल संरक्षण पर जोर दिया और गांव के आसपास सभी तालाबों, कुओं को बचाने उनकी साफ सफाई, संरक्षित करने, मृतप्राय तालाब, जोहड़ को पुर्नजीवित करने का बीड़ा उठाया।

जब उनको ग्राम प्रधान की जिम्मेदारी मिली तब पूरा गांव में बहुत ही समस्याओं से ग्रसित था, धीरे धीरे उनके हर नयी सामूहिक भलाई के कार्य गांव में लोगों को एकजुट करने में सफल हो गए और आज पूरे उत्तर प्रदेश में गांव नगली आज सरकार द्वारा दी जा रही सभी जन उपयोगी योजनाओ का सही सदुपयोग करके स्वच्छता, पूरी तरह शौचालय युक्त, सुन्दर और सुज्जजित प्राइमरी स्कूल, बिजली, पानी तथा आधुनिक सुख सुविधा से संपन्न गांव की श्रेणी में जुड़ गया हैं पुरे गांव की व्यवस्था देखने लायक हैं, हर घर में शौचालय हैं, स्ट्रीट लाइट्स हैं, पीने के पानी की साफ व्यवस्था हैं, सुरक्षा के पूरे इंतजाम हैं ।

कैलाश राघव
दिल्ली

पिछले कई साल से राजधानी दिल्ली के करीब दो करोड़ लोग 45 डिग्री तापमान में भयंकर गर्मी के दिनों में पानी की किल्लत से जूझ रहे हैं। दिल्ली का शायद ही कोई इलाका होगा, जहां वॉटर सप्लाई समान्य हो। पावर कट की समस्या इतनी गंभीर है कि लोगों का रात-दिन का चैन छिन जाता है। ऐसे में लोग अपनी मोटर पानी की टंकी भरने के लिए चला के छोड़ देते थे और सैकड़ो लीटर पानी बह कर बर्बाद होता हो तो आपको दुख नही होगा ? ये कहना है कैलाश राधव का ।

पानी की इस बर्बादी को रोकने के लिए सन 1998 में इस सुविधा यन्त्र का निर्माण किया, ये सुविधा यंत्र मैग्निटिक सेन्सर द्वारा स्वचालित है । आपकी पानी की टंकी में पानी का भर जाना, खुद समय पर मोटर का चल जाना, फिर पानी भरते ही मोटर का बंद हो जाना इसकी खास विशेषता है । वैसे मार्केट में कई इन्डस्ट्रियल मशीनें थी पर वे सब आम आदमी के पहुंच के बाहर थीं। आज कैलाश जी के लगाए यंत्र न जाने कितने जाने माने संस्थानों में सालों से हर बूंद पानी को बचाने का काम कर रहे है। 12 हजार से ज्यादा यंत्र लगाने वाले कैलाश जी अब इस यंत्र की लागत और कम यानि 800 रुपये लगभग लाने की जुगत में लगे है । इन्दिरापुरम, सूर्यनगर, गाजियाबाद, विश्वासनगर, पूर्वी दिल्ली के कई इलाको में ये यंत्र सालों से बिना किसी परेशानी के चल रहे है ।

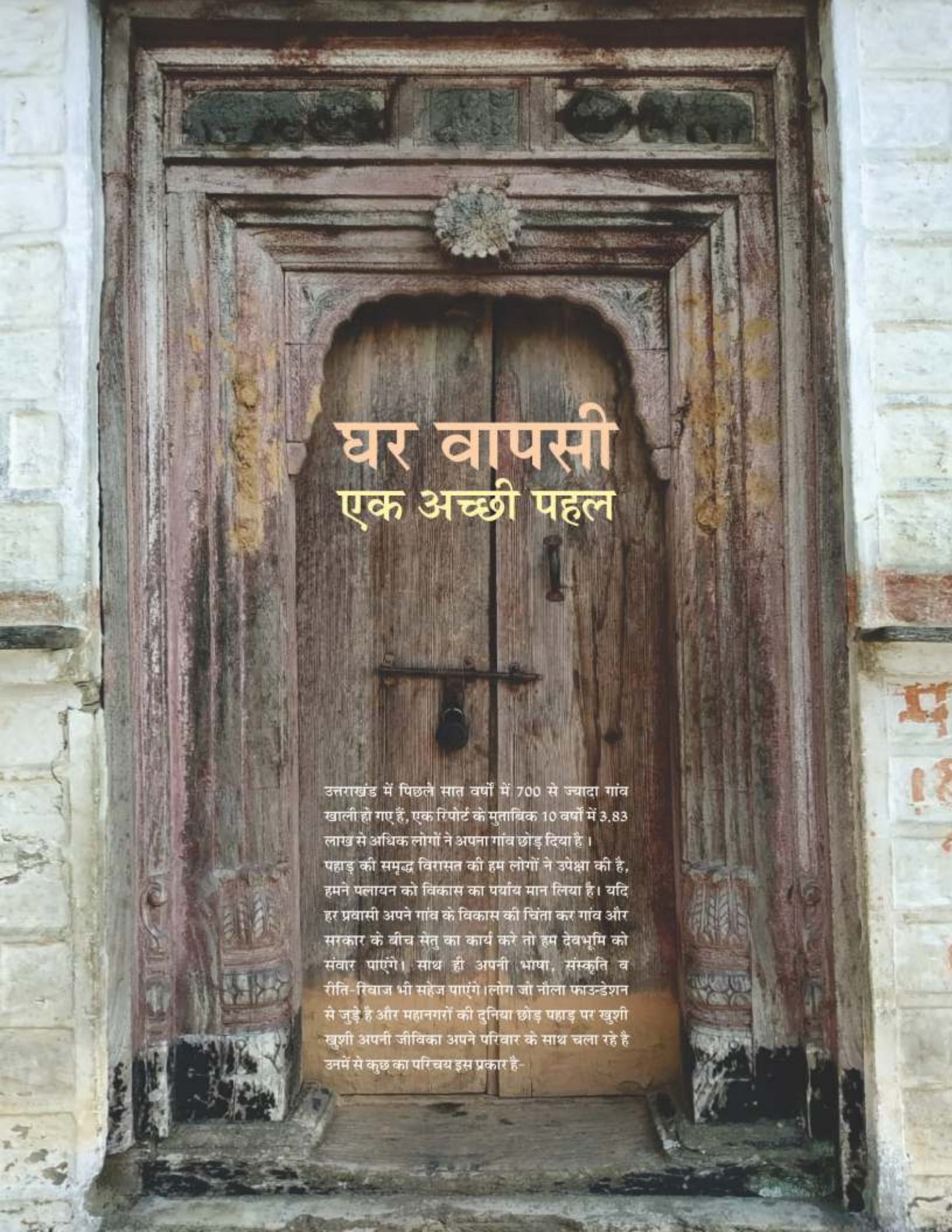

घर वापसी
एक अच्छी पहल

उत्तराखंड में पिछले सात वर्षों में 700 से ज्यादा गांव खाली हो गए हैं, एक रिपोर्ट के मुताबिक 10 वर्षों में 3.83 लाख से अधिक लोगों ने अपना गांव छोड़ दिया है।

पहाड़ की समृद्ध विरासत की हम लोगों ने उपेक्षा की है, हमने पलायन को विकास का पर्याय मान लिया है। यदि हर प्रवासी अपने गांव के विकास की चिंता कर गांव और सरकार के बीच सेतु का कार्य करे तो हम देवभूमि को संवार पाएंगे। साथ ही अपनी भाषा, संस्कृति व रीति-रिवाज भी सहेज पाएंगे।लोग जो नौला फाउन्डेशन से जुड़े है और महानगरों की दुनिया छोड़ पहाड़ पर खुशी खुशी अपनी जीविका अपने परिवार के साथ चला रहे है उनमें से कुछ का परिचय इस प्रकार है-

श्री मनोज थुवाल

शहरफाटक, ग्राम सभा डामर, विकास खंड लमगड़ा, जिला अल्मोड़ा निवासी श्री मनोज थुवाल अपने गांव के शहरफाटक में जनरल स्टोर चलने के साथ-साथ आलू व राजमा की सफल खेती करते हैं । श्री मनोज थुवाल के पिता सेना से सेवानिवृत होकर हल्द्वानी शहर में बस गए । श्री मनोज थुवाल ने पलायन वापसी को एक पहल मानते हुए अपने गांव में लौटने का मन बनाया और आज वो क्षेत्र के सफल उद्यमी हैं ।

श्री कमल बिष्ट

ग्राम सभा डोल, विकास खंड लमगड़ा, जिला अल्मोड़ा निवासी युवा उद्यमी श्री कमल बिष्ट जी खूबसूरत हिल स्टेशन शहरफाटक में इलेक्ट्रॉनिक्स की दुकान चलाते हैं और क्षेत्र को युवाओं को स्वरोजगार करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं । श्री कमल बिष्ट की गाजियाबाद शहर में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी में इंजीनियर की नौकरी भी लग गयी थी पर श्री कमल बिष्ट जी का मन हमेशा अपने गांव अपने जड़ों के लिए कुछ न कुछ करने को करता था और एक दिन पलायन वापसी को एक पहल मानते हुए अपने गांव में लौटने का मन बनाया और आज वो क्षेत्र के सफल उद्यमी हैं ।आज पुरे क्षेत्र में उनका मोबाइल फ़ोन रिपेयर का काम बहुत अच्छा चल रहा हैं और साथ ही वो मोबाइल रिपेयर का प्रशिक्षण भी दे रहे हैं ।

श्री ललित बिष्ट

ग्राम बड़ेत, विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा निवासी सामाजिक कार्यकर्ता ललित बिष्ट ने दिल्ली महानगर में AIIMS में नौकरी करते हुए महानगर की चकाचौंध को त्याग कर हमेशा के लिए अपने गांव में बसने का निर्णय लिया और वही कुछ न कुछ करने की ठान ली और आज ललित बिष्ट क्षेत्र के सफल सामाजिक कार्यकर्ता हैं और द्वाराहाट बाजार में एक दवा की दुकान चलाते हुए क्षेत्र में युवाओं को पलायन न करने अपनी माटी संस्कृति से जुड़े रहने की प्रेरणा देने की एक मिसाल बन चुके हैं ।

श्री रमेश मलकानी

ग्राम सभा नाटाडोल, विकास खंड लमगड़ा, जिला अल्मोड़ा निवासी श्री रमेश मलकानी जी को अल्मोड़ा जिले में एक सफल उद्यमी और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में जाना जाता हैं । आज श्री रमेश मलकानी जी के फल देश विदेश में एक्सपोर्ट हो रहे हैं और उनकी धर्म पत्नी जो एक क्षेत्र पंचायत सदस्य हैं, दोनों मिलकर क्षेत्र के युवाओ को रोजगार देने के साथ ही पलायन रोकने के साथ साथ पारम्परिक नौले धारों पर भी कार्य कर रहे हैं ।

दुर्गा दत्त उप्रेती

ग्राम चाफी विकास खंड रामगढ जिला नैनीताल निवासी दुर्गा दत्त उप्रेती आज उत्तराखंड के सफल फूल व सब्जी उत्पादक हैं जो बहुत बड़े पैमाने पर फूलों व सब्जी के खेती करते हैं और आज उनके फूल देश भर में भेजे जा रहे हैं । आज दुर्गा दत्त उप्रेती नैनीताल जिले में पलायन रोकने और स्थानीय युवाओं को रोजगार देने में सफल हुए हैं। दुर्गा दत्त सामाजिक कार्यकर्ता और कृषि उद्यमी आज नैनीताल जिले में पलायन वापसी की लिए एक मिसाल बन कर उभरे हैं और इनसे प्रेरणा लेकर काफी युवा आज पुरे उत्तराखंड में कृषि उत्पादन में भी अपने हाथ आजमा रहे हैं और सफल भी हैं।

श्री गणेश कठायत

विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड के ग्राम इड़ा सेरा थामण का युवा उद्यमी गणेश सिंह कठायत ने आज पलायन को ठेंगा दिखाकर अपने सुदूर गांव में जैविक खेती करके गगास घाटी के युवाओं को घर वापसी का सन्देश दिया है । कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातक गणेश कठायत ने पहले दिल्ली में मार्केटिंग की नौकरी की और फिर रिटेल सेक्टर में भी हाथ आजमाया । बकौल गणेश कठायत पहाड़ से लगाव की वजह से, मुझे अपने गाँव और पहाड़ में बदलाव की ज़रूरत महसूस हुई, साथ ही 'गाँधी जी ने कहा-वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं ' ने मुझे अन्दर तक झकझोर दिया, और छह साल के रोजगार के बाद, मैं वापस आया मेरा गाँव। यहां मैंने मशरूम की खेती के साथ शुरुआत की जो बहुत अच्छी थी, मैं आजकल मशरूम के साथ जैविक खेती कर रहा हूं, प्रदूषण से दूर स्वस्थ वातावरण में हूं ।

श्री भूपेंद्र सिंह बिष्ट

विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड के ग्राम रावल सेरा का युवा उद्यमी भूपेंद्र सिंह बिष्ट वर्तमान में कृषि क्षेत्र में जैविक खेती, मशरूम की खेती आदि के साथ साथ सामाजिक रुपए से भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं । पेशे से सिविल इंजीनियर भुपेन्द्र बिष्ट की नौकरी काफी अच्छी थी लेकिन नौकरी के दौरान आत्म संतुष्टि नहीं मिल रही थी। मैं अपने जीवन से ऊब गया था। नौकरी के दौरान, मैं अपनी मातृभूमि अपने गांव के बारे में लगातार सोचता रहा। एक दिन मैंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दे दिया और अपने गाँव वापस चला गया और अब मैं कृषि / बागवानी क्षेत्र और ''पुनर्स्थापना क्षेत्र'' के साथ कई क्षेत्रों में काम कर रहा हूँ। अंत में मैं कहूंगा कि 'उत्तराखंड में स्वरोजगार के कई अवसर हैं और कई नौकरियां भी हैं। अगर उत्तराखंड के युवा जाग गए, तो उत्तराखंड अवश्य एक मजबूत राज्य बन जाएगा।

नौला फाउन्डेशन

जीवन बहुत लोगों का एक सम्मिलित चित्र है। कोई माली गुलाब के फूल बनाता नहीं है, सिर्फ जमीन तैयार करता है, परम्परा के बीज बोता है, संस्कार की खाद देता है, अनुभव के फूल तो अपने से आते हैं।

जिनके भीतर भी थोड़ी आत्मा है, उनके फूल खिलेंगे ही, बीज तो वही है, वृक्ष बना है, पत्तों से भरा है, फूल खिले हैं। हमारे संरक्षक आदरणीय यशोधर मठपाल जी, पर्यावरण संरक्षक मनोहर सिंह मनराल जी, किशन भट्ट जी, पानदेव थुवाल जी, युवा वैज्ञानिक नवीन जोशी जी, मनोज पांडेय जी, खेम सिंह कठायत जी, युवा ग्राम प्रधान ठाकुर देवेन्द्र सिंह जी जैसे अनगिनत प्रकृति प्रेमियों, वैज्ञानिकों, समाजसेवियों, बुद्धिजीवी वर्ग जिन्होने समाज के लिए अपनी निःस्वार्थ सेवायें दी है, जो बिना किसी स्वार्थ के परमार्थ के लिए धरती पर माली का निरंतर कार्य कर रहे हैं उनके विगत 40 सालों के प्राकृतिक- सांस्कारिक अनुभवों का साझा परिणाम है नौला फाउन्डेशन।

पहाड़-पानी-परम्परा नौला फाउन्डेशन की नींव है , नौले धारे हमारी संस्कृति है, पहाड़ हमारा गौरवशाली इतिहास है, हमें एक ऐसी दुनिया बनानी है जहां पर जीवन मूल्यों में प्रकृति सबसे महत्वपूर्ण है, जैवविविधता गौरवान्वित है, पहाड़ हरे-भरे हैं, जहां हर मनुष्य प्रकृति प्रेम में है ।

NAULA
FOUNDATION

NAULA FOUNDATION

जलम् जल स्थानगतिम् सर्वथा एव रक्षणीयम् ।
जन्तूनां सुख जीवनं हेतु जलस्य रक्षणम् नूनं भवतु।।

सुधिजनों,

आज संस्था की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बहुत प्रसन्नता महसूस कर रहा हूँ । जल, जंगल व जमीन, पारिस्थितिकी को बचने की खातिर नौला फाउंडेशन की स्थापना की गयी जो कि एक समर्पित स्वयंसेवी गैर लाभकारी संगठन है जो सामाजिक समरसता के लिए प्रतिबद्ध है ।वर्तमान समय में संवेदनशील हिमालय की प्राकृतिक जैव विविधता, सुंदरता और शांति दांव पर है। हमें खुद ही अपने पारम्परिक जलस्रोतों को बचाने के लिये आगे आना होगा, क्योंकि अब हमारे सामने ज्यादा विकल्प नही बचे हैं। आने वाले समय में पानी की माँग बढ़ती जाएगी और पानी की मात्रा घटती जाएगी। ऐसे में नलका संस्कृति के चलते उपजी लापरवाही से बचना होगा और इन पारम्परिक व्यवस्थाओं को सम्भालना होगा। कुल मिलाकर पुरातन जल संस्कृति के विज्ञान को बदलते दौर में भी समझने की जरूरत है। आज हम सबको सामाजिक समरसता के जरिये स्थानीय युवाओ और ग्रामीण परिवारों को इसके लिए तैयार करना होगा उनकी स्वरोजगार और उनकी आजीविका के लिए वैकल्पिक व्यवसाय पर निर्भरता बढ़ानी होगी ।

संवेदनशीलता के साथ सामाजिक सक्रियता, ईमानदारी और पारदर्शिता नौला फाउंडेशन के मूल तत्व हैं। हमें आपके समर्थन और मार्गदर्शन की जरूरत है।

मैं नौला फाउंडेशन बोर्ड के सभी सदस्यों और सलाहकार समिति व नौला मित्रों के प्रयासों की सराहना करता हूं, हम समस्त उत्तराखंड के सशक्तिकरण और उन सभी लोगों के उत्थान के लिए कृतसंकल्प हैं जो समर्पित होकर काम करने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर चलने को तैयार है।

वंदे मातरम्

गगन प्रकाश सिंह
सचिव

NAULA
FOUNDATION

हिमालयं समारभ्य यावत् इंदु सरोवरम् ।
तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते ।।

जल-जंगल-जमीन भारत की परम्परागत संस्कृति के सामाजिक एवं आर्थिक मूल आधार रहे हैं। हमने जैसे-जैसे विकास के नाम पर इन तीनों को दरकिनार करना शुरू किया, हमारा पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ गया।। भारत के परिवेश में सिर्फ वर्षा जल ही खेती के लिए पर्याप्त होता रहा है। आज रसायनों के इस्तेमाल से भू-जल समाप्ति की ओर है। आज से 30 साल पहले 10 से 20 फिट पर पानी मिल जाता था। तब हम पहली परत का पानी पीते थे, उसके बाद 60-80 फिट पर पानी मिलने लगा। वह दूसरी परत का पानी था। वर्तमान में 100 फिट से नीचे जाकर पानी के लिए बोरिंग करते हैं। यह तीसरी परत का पानी है। यह अन्तिम परत है जिसके 2030 के बाद खत्म होने की सम्भावना है। भारत के नौ राज्यों में भूजल का स्तर खत्म होने के खतरनाक स्तर पर है। उपलब्ध जल का 90 प्रतिशत इस्तेमाल हो चुका है। सरकारी आंकड़ों को देखें तो 1947 में भारत के प्रति व्यक्ति के पास जल उपलब्धता 6,042 घन मीटर थी। 2011 में यह घटकर 1,545 घन मीटर रह गई है। भारत में सिंचाई में 80 प्रतिशत हिस्सा नदी, नहरों और भूजल से पूरा होता है। बाकी 20 प्रतिशत में वर्षा जल, तालाब जल एवं अन्य उपलब्ध संसाधन हैं। उपलब्ध जल के संसाधनों का मूल्य नहीं समझ पा रहे हैं। शायद हम विकास एवं विनाश की सही विभाजक रेखा का निर्धारण नहीं कर पा रहे और यही वर्तमान समस्या का कारण है। नौला फाउंडेशन का मूल उद्येश्य इन सभी दर्शनों में सामंजस्य बिठाना है। बौद्धिकता तथा नैतिकता से तालमेल साधना है। प्रकृति का स्पर्श मानवता को संतुलित रखता है। परम्परागत विज्ञान और नये विज्ञान के समझ के सेतु समन्वय होने पर समाज की बेहतर सेवा और सभी जीवधारियों का कल्याण होगा। नौला फाउंडेशन परिवार को जल संरक्षण का सफल प्रयास कर रहे अनेको महापुरुषो का सानिध्य प्राप्त होता रहा है, नौला फाउंडेशन परिवार उन्हें कोटि कोटि धन्यवाद अर्पित करता है तथा यह आशा रखता है कि उनका मार्गदर्शन हमें भविष्य में प्राप्त होता रहेगा।

जय भारत!
बिशन सिंह
अध्यक्ष

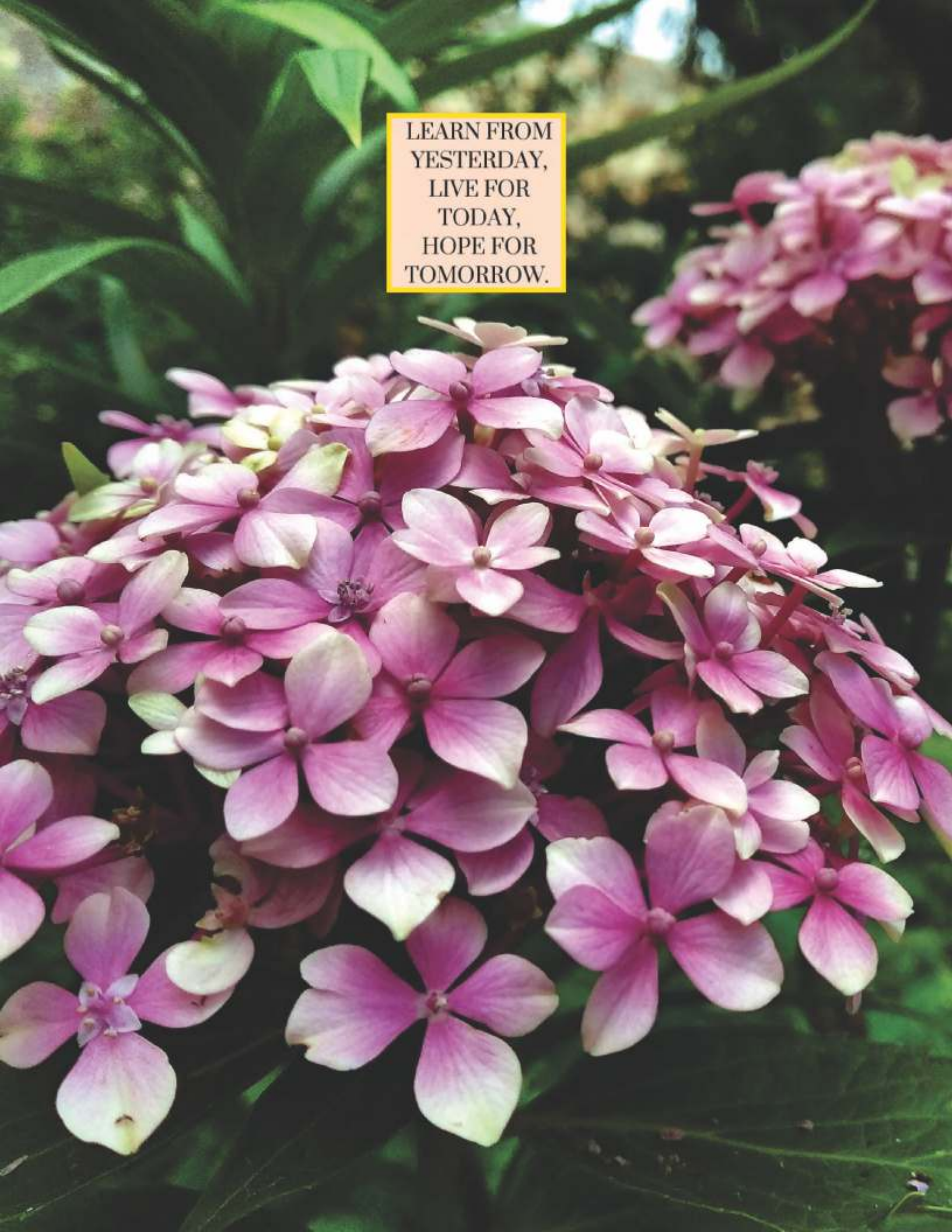
LEARN FROM
YESTERDAY,
LIVE FOR
TODAY,
HOPE FOR
TOMORROW.

NAULA FOUNDATION

वार्षिक कार्य विवरण

ANNUAL REPORT 2018-2019

NAULA FOUNDATION

''जल बचाओ '' बृहद सामाजिक जन जागरूकता अभियान और सामाजिक समरसता कार्यशाला

गगास नदी घाटी गांव, बग्वाली पोखर, विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड

23-24 जून 2018

23-24 जून, 2018

Naula
Foundation

Naula
Foundation

जिला स्तरीय जल – वन हमारी अभियान
Naula

Foundation
2018

NAULA FOUNDATION

"हरेला" वृक्षारोपण सप्ताह

गगास नदी घाटी गांव, बग्वाली पोखर, विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड

15-16 जुलाई 2018

हरेला दिवस

NAULA FOUNDATION

बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रमः 'हरित गुरुग्राम - स्वच्छ गुरुग्राम'

राजीव चौक और इफको चौक, गुरुग्राम, हरियाणा

28-29 जुलाई 2018

NAULA FOUNDATION

उत्तराखंड विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र (युसर्क), देहरादून द्वारा नौला फाउंडेशन के कार्यों का राजकीय निरीक्षण और विज्ञान इको क्लब कार्यशाला

1. राजकीय इंटर कॉलेज एवं राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, बग्वाली पोखर
2. गगास नदी घाटी गांव, बग्वाली पोखर, विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड

14-15 अगस्त 2018

NAULA
FOUNDATION

NAULA
FOUNDATION

NAULA FOUNDATION

स्वच्छता पखवाड़ा - बृहद सामाजिक जन जागरूकता अभियान और सामाजिक समरसता बैठक कार्यक्रम (रौगाड़ बचाओ अभियान)

15-18 सितम्बर 2018

1. राजकीय इंटर कॉलेज एवं राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, बग्वाली पोखर
2. गगास नदी घाटी गांव, बगवाली पोखर, विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड

NAWLA
FOUNDATION

NAWLA
FOUNDATION

NAWLA
FOUNDATION

NAULA FOUNDATION

उत्तराखंड – जलवायु परिवर्तन, पलायन समस्या

अखिल भारतीय मीडिया संस्थान ऑडिटोरियम, नई दिल्ली

14 अक्टूबर 2018

NAULA

NAULA FOUNDATION

1. बग्वाली मेला - बृहद सामुदायिक समरसता कार्यक्रम
2. कुरी (लैंटेना) उन्मूलन कार्यक्रम

9-11 नवम्बर 2018

गगास नदी घाटी गांव, बगवाली पोखर, विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड

NAULA FOUNDATION

नमामि गंगे द्वारा आयोजित आयोजित वैज्ञानिक कार्यशाला 'फारेस्ट फॉर वाटर' में वक्ता के रुप में भागीदारी और चर्चा

भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून, उत्तराखंड

28 नवम्बर 2018

NAULA FOUNDATION

प्लस एप्रोच फाउंडेशन और सीएसआर टाइम्स द्वारा पर्यावरण संरक्षण पर उत्कृष्ट जमीनी स्तर के कार्यों के लिए साल 2018 का 'पीक दधीचि' पुरस्कार सम्मान समारोह

स्कोप ऑडिटोरियम, सीजीओ काम्प्लेक्स, नई दिल्ली

1 दिसम्बर 2018

NAULA FOUNDATION

उत्तराखंड विज्ञानं शिक्षा एवं अनुसंधान केंद्र, देहरादून और नौला फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में नौला धारा जल संरक्षण हितधारक वैज्ञानिक कार्यशाला 'नीर, नदी और नौले' का कुमाऊँ विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजन

लक्ष्मण सिंह महर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

23-24 दिसम्बर 2018

NAULA FOUNDATION

'पानी बचाओ- जन जागरूकता अभियान' : मंथन

उत्तराखंड विज्ञानं शिक्षा एवं अनुसन्धान केंद्र (युसर्क), देहरादून

14 जनवरी 2019

उत्तराखंड विज्ञानं शिक्षा एवं अनुसन्धान केंद्र (युसर्क), देहरादून द्वारा आयोजित आयोजित 'विज्ञान कांग्रेस' में भागीदारी

सभागार, श्री गुरु राम राय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड

24 फरवरी 2019

NAULA FOUNDATION

अखिल भारतीय लोकल सेल्फ गवर्नमेंट व एन.सी.जी.जी. मसूरी द्वारा आयोजित वैज्ञानिक कार्यशाला "अव्यस्थित क्षेत्र मल अपव्यव प्रबंधन" में भागीदारी

27 फरवरी 2019

होटल वेलकम फॉर्च्यून सेवॉय, मॉल रोड, मसूरी, उत्तराखंड

NAULA FOUNDATION

नौला फाउंडेशन द्वारा आयोजित नौला-धारा जल सप्ताह

उत्तराखंड राज्य भर के विभिन्न स्थानों पर नौले- धारे के सफाई अभियान और पूजन

17-26 मार्च 2019

|| नौला फाउंडेशन स्थापना दिवस ||

श्री हरि समर्पित 'आमलकी एकादशी' दिनांक 17मार्च 2019

प्रिय साथियों,

भारतीय परम्परा में जलस्रोतों का निर्माण पुण्य का कार्य है ये नौले उत्तराखंड की संस्कृतिकला और संस्कार के श्रेष्ठ प्रतिनिधि हैं। महाभारत में भगवान विष्णु स्वयं कहते हैं कि जल में निवास करने के कारण मेरा नाम नारायण (नार- जल, आयन- घर) है, अत: विष्णु की जल से सम्बद्धता के कारण नौलों में विष्णु की शेषशायी प्रतिमाएं नौलों में स्थापित की गयी। हमारे नौले जिसमे नारायण स्वयं निवास करते है, हमारी प्राथमिक आवश्यकता है। यदि हमारादृष्टिकोण ठीक है, तभी हम इस नौले के जल में नारायण तत्व को समझ सकते है, आत्मसात कर सकते है। नौला फाउंडेशन भगवान विष्णुनारायण को समर्पित संस्था है जिसका प्रमुख उद्देश्य समस्त धारे नौले का सांस्कृतिक संरक्षण कराना उनका जीर्णोद्धार कराना और उनका सम्मान वापस दिलाना है। नौला फाउंडेशन अपना स्थापना दिवस श्री हरि समर्पित 'आमलकी एकादशी' दिनांक 17मार्च 2019 को मना रही है, आंवला को शास्त्रों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। आंवले को भगवान श्रीहरिविष्णु ने आदि वृक्ष के रूप में प्रतिष्ठित किया है। इसके हर अंग में ईश्वर का स्थान माना गया है।

आप सभी से यह विनम्र अपील है कि 'आमलकी एकादशी' दिनांक 17मार्च 2019 के दिन सुबह स्नान करके अपने आसपास स्थित किसी भी नौले पर जाएं और उस नौले पर अंकित भगवान विष्णु की प्रतिमा के समक्ष हाथ में तिल, कुश, मुद्रा और जल लेकर संकल्प करें कि- ''जल हमारी संस्कृति है नौले हमारी परंपरा है अत: मैं भगवान विष्णु की प्रसन्नता एवं मोक्ष की कामना से मैं समस्त नौलों का सम्मान करूंगा तथा नौलों के संरक्षण में यथासम्भव सहयोग करूंगा। मेरा यह व्रत सफलतापूर्वक पूरा हो इसके लिए श्रीहरि मुझे अपनी शरण में रखें।''

ईमानदारी से हम मानें तो इस विषय की गंभीरता को देश के हर नागरिक को समझने की जरूरत है, केवल ये ही एक ऐसा मसला है जो कि हमें 24 घंटे याद रखने की जरूरत है की जल ही जीवन है, नौले का संरक्षण तथा जल का सही उपयोग हमें जल के संरक्षण में पूर्ण सहयोग दे सकता है और हम अपने आने वाले पीढ़ी को नारायण के संस्कार से दीक्षित कर सकते है। आप संकल्पित हो। हम इस प्रयोग द्वारा देश के प्रत्येक नागरिको को स्वच्छ शुद्ध जल की उपलब्धता सुनिश्चित करा सकें यही भगवान विष्णु से प्रार्थना है।

जय हिन्द जय भारत।

www.naulafoundation.org

नौले हमारा भविष्य है इन्हें भावी पीढ़ियों के लिये स्वस्थ रखना हम सबका दायित्व है ।

'आमलकी एकादशी' दिनांक 17मार्च 2019 के दिन नौले पर अंकित भगवान श्री विष्णु की प्रतिमा के समक्ष हाथ में तिल, कुश और जल लेकर समस्त नौलों का सम्मान तथा नौलों के संरक्षण हेतु श्री किशन चन्द्र भट्ट, ललित मेहरा, श्री गौरव पंत, श्री भुवन चन्द्र, श्री पुरोहित मोहन चंद्र, व्यास रवीन्द्र कर्नाटक, खड़की प्रधान किरणभट्ट, डा.असित खन्ना, श्री गणेश कठायत, श्री कुबेर कठायत, श्री हेमन्त जोशी, डा. ईश्वरी राय, मनोज पान्डे तथा थामण गांव निवासी महिला मंगल दल तथा उत्तराखंड के अलग अलग ग्राम निवासियों नें व्रत लिया। जल ही जीवन है, नौले का संरक्षण तथा जल का सही उपयोग हमें जल के संरक्षण में पूर्ण सहयोग दे सकता है और हम अपने आने वाले पीढ़ी को नारायण के संस्कार से दीक्षित कर सकते है।

NAULA FOUNDATION

तालाब, जोहड़ और जल संरक्षण के लिए सामाजिक समरसता कार्यक्रम

ग्राम नंगली मिर्ज़ापुर, तहसील - स्याना , जिला बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

19-20 मार्च 2019

NAULA FOUNDATION

'विश्व जल दिवस' के उपलक्ष्य में पर्यावरण विज्ञान विद्यालय, एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित वैज्ञानिक कार्यशाला में भागेदारी

21 मार्च 2019

NAULA FOUNDATION

उत्तराखंड विज्ञान शिक्षा एवं अनुसन्धान केंद्र (युसर्क), देहरादून और नौला फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय जल संरक्षण वैज्ञानिक कार्यशाला 'पानी की आवाज़ सुनो 2030' का आयोजन व सामाजिक समरसता कार्यक्रम पर परिचर्चा

14-15 अप्रैल 2019

पवलगढ़ प्रकृति प्रहरी, इको हैरीमेंस होमस्टे,
पवलगढ़ संरक्षित फॉरेस्ट रिज़र्व कैंप, नैनीताल, उत्तराखंड

NAULA FOUNDATION

विश्व पृथ्वी दिवस : विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर नौला फाउंडेशन द्वारा स्कूली छात्रों के बीच विशेष चित्रकला प्रतियोगिता - पृथ्वी को कैसे बचाएं?

ज्ञान देवी सलवान पब्लिक स्कूल, राजिन्दर नगर, नईदिल्ली

22 अप्रैल 2019

ENVIRONMENTAL PROTECTION
SAVE WATER

NAULA FOUNDATION

राष्ट्रीय जल मिशन, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित "जल चर्चा" में नौला फाउंडेशन टीम द्वारा विशेष पोस्टर प्रदर्शनी और भागीदारी

1 व 24 मई 2019

अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर, जनपथ, नई दिल्ली।

NAULA FOUNDATION

'पानी की आवाज सुनो 2030' के तहत पारम्परिक जल स्रोतों का गौला नदी उद्गम वन क्षेत्र में हिमालयन पारिस्थितकी संरक्षण के अभियान (पहाड़-पानी-परंपरा)का शुभारम्भ

विकास खंड-लमगड़ा, जिला अल्मोड़ा, विकास खंड - रामगढ़, जिला नैनीताल, विकास खंड - पाटी, जिला चम्पावत।

5-6 जून 2019

NAULA FOUNDATION

राष्ट्रीय जल मिशन, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित "जल चर्चा" में नौला फाउंडेशन टीम द्वारा विशेष पोस्टर प्रदर्शनी और भागीदारी

19 जुलाई 2019

अंबेडकर इंटरनेशनल सेंटर, जनपथ, नई दिल्ली।

NAULA FOUNDATION

नौला फाउंडेशन द्वारा आयोजित 'जल का सही उपयोग' जागरूकता अभियान

विकास खण्ड-ऊँचागांव, ग्राम पंचायत मिर्ज़ापुर नगली बुलन्दशहर

16-22 जुलाई 2019

NAULA FOUNDATION

नौला फाउंडेशन द्वारा आयोजित जल संरक्षण के लिए चाल-खाल निर्माण सामाजिक कार्यक्रम

27 जुलाई 2019

गगास नदी घाटी गांव, बगवाली पोखर, विकासखंड द्वाराहाट, जिला अल्मोड़ा, उत्तराखंड

NAULA FOUNDATION

नौला फाउंडेशन द्वारा आयोजित ग्राम पंचायत मिर्ज़ापुर नगली में वृक्षारोपण कार्यक्रम

2 अगस्त 2019

विकास खण्ड-ऊँचागांव, ग्राम पंचायत मिर्ज़ापुर नगली बुलन्दशहर

जल शक्ति अभियान, भारत सरकार को समर्थित

हितधारक शिविर कार्यशाला

पहाड़-पानी-परम्परा

पारंपरिक नौले-धारे तथा जल-जंगल-जमीन को बचाने की मुहिम

मन की बात जल की बात

11-12 अगस्त 2019

'नौला फाउंडेशन' के द्वारा उत्तराखंड की सांस्कृतिक नगरी के रूप में प्रसिद्ध द्वाराहाट में 11और 12 अगस्त को 'मन की बात जल की बात' शीर्षक से आयोजित हितधारक वैज्ञानिक कार्यशाला में जल संरक्षण,जल प्रबंधन और जल विज्ञान को लेकर जमीनी धरातल पर काफी गम्भीर चर्चाएं हुई हैं ।

इस अवसर पर उत्तराखंड के अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त पुरातत्त्वविद और नौला स्थापत्य के विशेषज्ञ पद्मश्री डा.यशोधर मठपाल ने मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए अपने विद्वतापूर्ण सम्बोधन में कहा कि आज जलसंकट के लिए मुख्य रूप से आम आदमी कम जिम्मेदार है बल्कि बड़े बड़े होटल और फैक्टरी वाले व्यवसायी इसका अंधाधुंध दोहन कर रहे हैं। आम आदमी आज भी जल को विष्णुभाव से देखता है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड से लोगों का पलायन हो रहा है किंतु यहां बाहर से आने वाले उद्योगपति और विदेशी पर्यटकों से जल संकट की समस्या और भी भीषण हो सकती है, जिससे भारी मात्रा में भूमिगत जल का दोहन किया जाएगा।उन्होंने कहा कि चीड़ और कुरी की झाड़ियों की वजह से भी भूमिगत जल नीचे जा रहा है और जलस्रोत सूख रहे हैं। मीडिया चैनलों के समक्ष भी उन्होंने कहा कि व्यवसायीकरण के कारण वर्तमान भूमिगत जल का भारी संकट उत्पन्न हुआ है।

कार्यशाला के पहले दिन 11अगस्त को द्वाराहाट के असगोली ग्राम में जलवैज्ञानिकों की टीम के निर्देशन में जल स्रोतों की निशानदेही करते हुए ग्रामवासियों द्वारा जल रिचार्ज करने वाले विभिन्न किस्म के 400 पेड़ों का पौधारोपण किया गया। दिल्ली, बनारस, हल्द्वानी, अल्मोड़ा, भीमताल से आए जलवैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों ने पहले जलविज्ञान की दृष्टि से असगोली क्षेत्र के नौलों और जलस्रोतों का भौगोलिक निरीक्षण किया तथा उसके आधार पर ग्रामवासियों के साथ सामूहिक चर्चा की।

दिनांक 12 अगस्त को द्वाराहाट स्नातकोत्तर महाविद्यालय में इस कार्यशाला के अंतर्गत दो सत्रों में 'मन की बात और जल की बात' को जानने के लिए पैनल डिस्कशन का आयोजन हुआ। पैनल डिस्कशन में द्रोणगिरि के भौगोलिक क्षेत्र और वहां विद्यमान नौलों के पुर्नजीवन को लेकर महत्त्वपूर्ण जानकारियां क्षेत्रवासियों को दी गईं। छात्र छात्राओं और श्रोताओं की ओर से भी उत्तराखंड में जल संकट की समस्या को लेकर पैनल के विद्वानों के सामने कई ज्वलंत प्रश्न रखे गए जिनमें पर्यावरण के विरुद्ध की जाने वाली विकासवादी योजनाएं, जंगलों की कटाई, वनों में लगने वाली आग,जल की अपव्ययता और प्रशासनिक भ्रष्टाचार के मुद्दे शामिल थे। किन्तु विद्वानों का मानना था कि इस क्षेत्र में आज भी लुप्त होते जलस्रोतों को पुर्नजीवित करने की अपार संभावनाएं हैं परन्तु इसके लिए लोगों के पास ऐसी इच्छाशक्ति चाहिए और देश के पास पर्यावरणवादी सोच की जलनीति चाहिए, ताकि भूमिगत जल के वर्त्तमान संकट का निवारण हो सके।

भारत सरकार के जल शक्ति अभियान के समर्थन में द्वाराहाट के नौलों,धारों और गधेरों की वर्त्तमान स्थिति को सुधारने की दिशा में गम्भीरता से प्रयास करने के संकल्प के साथ नौला फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में नौला फाउंडेशन के मुख्य संरक्षक पद्मश्री यशोधर मठपाल की अध्यक्षता में गोविंद बल्लभ पन्त पर्यावरण सतत विकास संस्थान, कोसी (अल्मोड़ा) के प्रतिनिधि के रूप में डा.जे.सी.कुनियाल एवं डा.संदीपन, दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डा.मोहन चन्द तिवारी, विधान चन्द्र चौधरी, डा. सुरेश मठपाल, मनोहर सिंह मनराल, द्वाराहाट महाविद्यालय के प्राचार्य डा.ए.के. श्रीवास्तव, डा. प्रेम प्रकाश, मल्टी डिसिप्लिनरी क्रिएटिव कन्सल्टैन्ट रूपम बोराह, डा.नरेन्द्र सिंह आदि विद्वान वैज्ञानिकों,पर्यावरणविदों और प्रकृति प्रेमियों ने उपस्थित छात्र छात्राओं और स्थानीय ग्रामीणों के साथ संवाद स्थापित करते हुए लुप्तप्राय नौलों,धारों और गधेरों की वर्त्तमान स्थिति को चिंताजनक बताते हुए इसे सुधारने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यशाला के संयोजक एवं समाज सेवी हीरा सिंह अधिकारी ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

इस चर्चा में सर्व सम्मति से यह मंतव्य उभर कर आया कि विगत वर्षों में भूजल के लगातार दोहन के परिणाम स्वरूप गिरते हुए जलस्तर से जो स्थिति बनी है वह आने वाले समय में और भयावह होगी। इस स्थिति से निपटने के लिए और सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए आमजन को आगे आकर जल स्रोतों के पुर्नजीवन और संरक्षण के लिए प्रभावी कदम उठाने होंगे। नौला फाउंडेशन के अध्यक्ष बिशन सिंह और समन्वयक स्वामी वीत तमसो ने बताया कि लोगों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक बनाने में लिए फाउंडेशन गम्भीर प्रयास कर रहा है।

अभी नहीं तो कभी नहीं

ALL NATUR

WELCOME

NAULA

YOU ALL
NAULA
FOUNDATION

WELCOME

NAULA FOUNDATION

जल शक्ति अभियान के तहत नौला फाउन्डेशन के सदस्यों द्वारा अभी भी सांस लेते पारंपरिक नौलों का निरीक्षण

13 अगस्त 2019

ग्राम सभा बड़ेत, विकासखंड द्वाराहाट

NAULA FOUNDATION

जल शक्ति अभियान के तहत नौला फाउन्डेशन के सदस्यों द्वारा पौधारोपण व चाल-खाल का निरीक्षण

ग्राम थामण, विकास खण्ड-द्वाराहाट

14 अगस्त 2019

NAULA FOUNDATION

जल शक्ति अभियान के तहत नौला फाउन्डेशन के सदस्यों द्वारा R5-2030 कार्यक्रम का शुभारम्भ

पवलगढ़, विकासखण्ड-कोटाबाग

15 अगस्त 2019

जगह-जगह फैले कूड़े के ढेर, जिनमें अधिकतर प्लास्टिक वेस्ट यानी रंग-बिरंगे पालीथिन बैग, टूटी-फूटी प्लास्टिक की बोतलें आदि दिखाई देती हैं, जो नॉन-बायोडिग्रेडेबल वस्तुएँ हैं, आज ये समस्या इतनी बढ़ गई है कि ये हमारे पर्यावरण के लिये बड़ा खतरा बन गई है। इस प्लास्टिक के सदुपयोग के लिए भारत के स्वच्छता अभियान को समर्थित आज 73 वें स्वतंत्रता दिवस के दिन नौला फाउंडेशन के एक महाअभियान '**R5**-2030' की शुरुआत हुई। हिमालय पुत्र नौला फाउंडेशन के मुख्य संरक्षक मनोहर सिहं मनराल ने बताया कि धरती को unplastic अब नहीं किया जा सकता, प्लास्टिक हमारे चारों ओर है परन्तु **R5** मतलब अंग्रेजी के अक्षर '**R**' को 5 बार प्रयोग में लाया है यानी **Reduce, Recycle, Reuse, Recover and Residuals Management.**

यदि इन पाँच 'आर' पर कड़ाई से अमल किया जाये तो काफी हद तक प्लास्टिक के कूड़े का प्रबन्धन किया जा सकता है। पवलगढ़ में अपनी टीम के साथ मनोहर मनराल ने लोगो को अपने प्लास्टिक अलग जमा करने का अनुरोध किया और उन्हें **R5**-2030 के बारे में विस्तार से बताया, क्षेत्र के युवा इस महा अभियान से लगातार जुड़ रहे है।

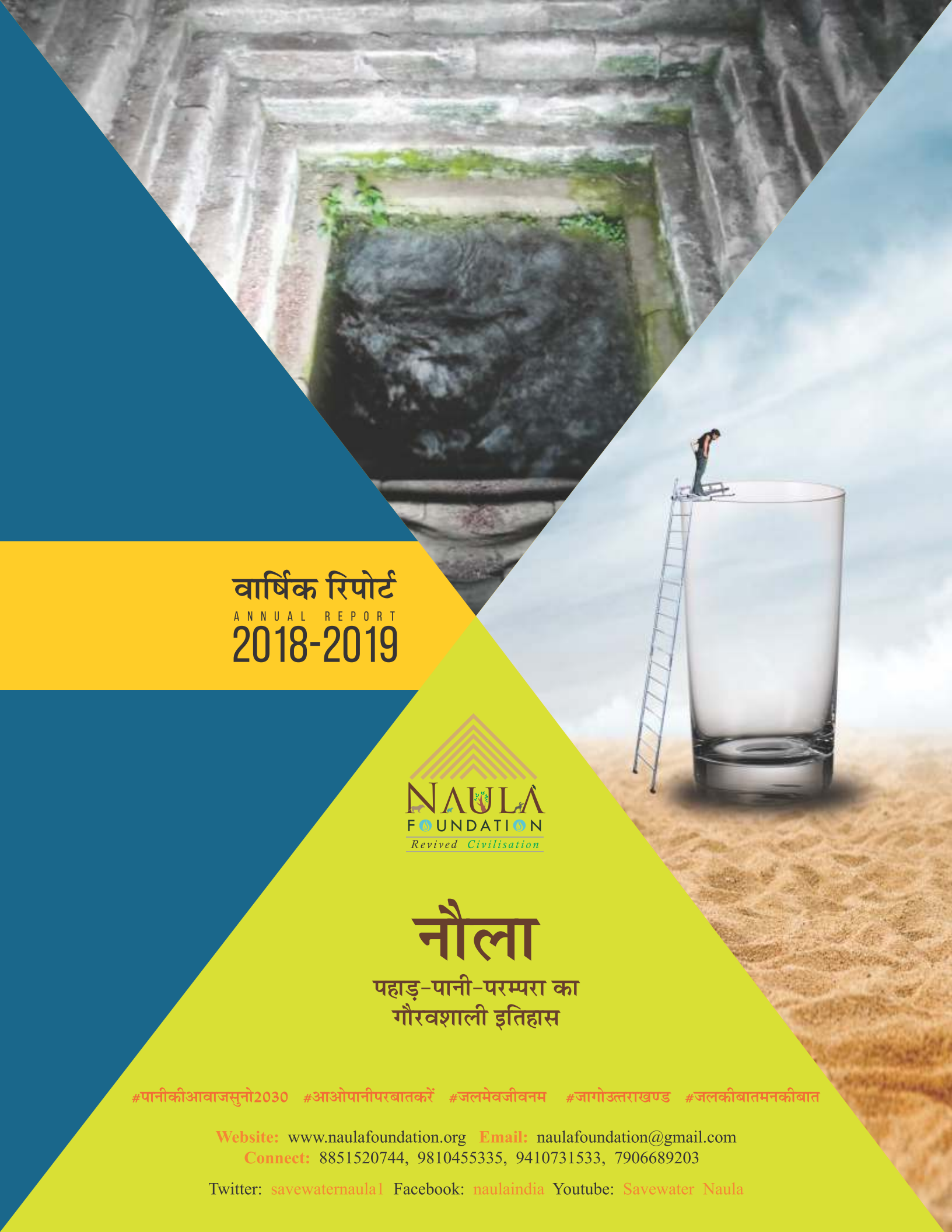

वार्षिक रिपोर्ट

ANNUAL REPORT

2018-2019

NAULA FOUNDATION

Revived Civilisation

नौला

पहाड़-पानी-परम्परा का गौरवशाली इतिहास

#पानीकीआवाजसुनो2030 #आओपानीपरबातकरें #जलमेवजीवनम #जागोउत्तराखण्ड #जलकीबातमनकीबात

Website: www.naulafoundation.org **Email:** naulafoundation@gmail.com
Connect: 8851520744, 9810455335, 9410731533, 7906689203

Twitter: savewaternaula1 Facebook: naulaindia Youtube: Savewater Naula